Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN(o): 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 9.134
Volume - 9, Issue - 1, January - 2026

DOIs:10.2018/SS/202601005 --:-- Research Paper / Article / Review

स्वामी विवेकानन्द के चिंतन में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के मूल तत्व

जयवीर सिंह, डॉ. सुनील कुमार सिंह
शोधार्थी:, सुपरवाइजरः
अर्मापुर पी0जी0 कॉलेज, कानपुर नगर।
Email - singh.jayveer127@gmail.com

सारांश (Abstract)- पश्चिमी चिंतन परंपरा के अनुसार राष्ट्रवाद भाषा, नस्ल, धर्म या जाति इत्यादि के आधार पर सामूहिक पहचान देकर परस्पर प्यार व एकता का संचार कर जनसमूह क संगठित करता है। भारतीय चिंतन प्रणाली में राष्ट्रवाद को भिन्न- भिन्न अर्थों में समझा गया है।

राष्ट्रवाद का भारतीय चिंतन ज्ञान परंपरा, वेदांत उपनिषद, नैतिक मूल्यों, आध्यात्मिकता, धर्म एवं संस्कृति पर अवलंबित है। इसे सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के रूप में पहचाना जाता है। स्वामी विवेकानन्द ने इसे विश्व पटल पर पख कर महान सभ्यता को विशिष्ट पहचान दिलाई। उनका चिंतन बौद्धिकता एवं वैज्ञानिकता का वाहक था। उन्होने सार्वभौमिकता एवं मानवतावाद का आधार वेदान्त दर्शन से लिया। " वेदान्त का मूल सिद्धान्त एकत्व है अखण्ड भाव है दिव्य कभी नही सर्वव्यापी केवल वही एक सत्ता है। वेदान्त हमें यह सिखाता है कि हम सभी एक है। "

(विवेकानन्द साहित्य (अष्टम खण्ड) पृष्ठ-13)

यह सार्वभौमिकता मानव की समता पर टिकी है जैन चिंतन में प्रत्येक सजीव या निर्जीव सभी में उस परम सत्ता का अंश आत्मा का वास है इसलिए प्रकृति के सभी जीवों के प्रति प्रेम यहाँ की अद्वितीय पहचान है। पर्यावरण के प्रति अगाध प्रेम, समर्पण एवं कर्तव्य भाव का दर्शन भारतीयों में सर्वप्रथम दृष्टिगत होता है। वह कहते है – " मैने इतनी तपस्या करके यही सार समझा है कि जीव – जीव में वे अधिष्ठित है, इसके अतिरिक्त ईश्वर और कुछ भी नही है। जो जीवों के प्रति दया करता है, वही व्यक्ति ईश्वर की सेवा कर रहा है।"
(विवेकानन्द जी के संग में, तृतीय संस्करण, पृष्ठ-374)

स्वामी विवेकानन्द भारतीय राष्ट्रवाद की जीवनधारा धार्मिकता को मानते है। इसमें नैतिकता, मानव सेवा, सहिष्णुता एवं समन्वय इत्यादि के गुण घुले-मिले हुए है। शिकागो के विश्व धर्म सम्मेलन में इसका उल्लेख करते हुए वह कहते है- " मैं तो ऐसे धर्म का अनुयायी होने में गर्व का अनुभव करता हूँ, जिसने संसार को सहिष्णुता एवं सार्वभौम स्वीकृति दोनों की ही शिक्षा दी है, मुझे एक ऐसे देश का व्यक्ति होने का अभिमान है, जिसने इस पृथ्वी के समस्त धर्मों और देशों के उत्पीड़ितो और शरणार्थियों को आश्रय दिया है।"

(रहबर हंसराज; योद्धा सन्यासी विवेकानन्द पृष्ठ-93)

भारतीय राष्ट्रवाद में सांप्रदायिकता, हठधर्मिता, वीभत्स धर्माधता एवं धन की लिप्सा को प्रमुखता नही दी गई। यहाँ गुणों की पूजा की गई जो किसी भौगोलिक सीमा से बंधा न रहकर "सर्वेभवन्तु सुखिनः" की कल्पना करता है। स्वामी विवेकानन्द ने सर्व धर्म समभाव, मानवतावाद एवं विश्व बंधुत्व का संदेश वैश्विक राष्ट्रवादी चिंतन को एक नयी दिशा दी। जिसे आगे बढ़ाने का दायित्व युवाओं के कंधो पर डाला। उनका आहवान करते हुए कहतै है- हे युवाओं ! तुम उस सर्वशक्तिमान की संताने हो। तुम उस अनन्त दिव्य अग्नि की चिंगारियां हो। इस आध्यात्मिक परिचय के साथ ही वे युवाओं का जीवन लक्ष्य स्पष्ट करते हुए कहते है "Each Soul is potentially Divine and The Goal is to manifest this Divinity" अर्थात हर आत्मा मूलरूप में देवस्वरूप है और लक्ष्य इस दिव्यता को जगाना है।
(यादव किशन, स्वामी विवेकानन्द की युवा दृष्टि और राष्ट्रीयता; शोध प्रबंध अध्याय-4, पृष्ठ सं-48)
स्वामी विवेकानन्द ने भारतीय राष्ट्रवाद की सोई हुई आत्मा को जगाकर 'न्यू इण्डिया' की मजबूत आधारशिला रख दी।

प्रमुख शब्द- राष्ट्रवाद, आध्यात्मिकता, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, वैज्ञानिकता, सार्वभौमिकता, मानवतावाद, पर्यावरण, समर्पण, सहिष्णुता, सांप्रदायिकता, धर्मांधता, सर्वधर्म समभाव, सर्वेभवन्तु सुखिनः।

शोध पत्र का उद्देश्यः-

- सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के मूल तत्व को प्रस्तुत करना।
- वर्तमान राजनीति में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के तत्व/प्रभाव को उदघाटित करना।
- वर्तमान समस्या समाधान में विवेकानन्द के सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के योगदान को स्पष्ट करना।

शोध अध्ययन प्राविधिः- शोध पत्र का विषय सैद्धान्तिक है। जिसमें शोध उद्दश्यों की प्राप्ति के लिए प्राथमिक व द्वितीयक आंकड़ो का योग कर ऐतिहासिक अवलोकन शोध प्राविधि का उपयोग किया गया है।

'स्वामी विवेकानन्द का सांस्कृतिक राष्ट्रवाद' प्रत्येक राष्ट्र का **"स्व अस्तित्व"** और आदर्श होता है, जो उसके समाज के राष्ट्रवादी चिंतन का आधार होता है। राष्ट्रवाद की पश्चिमी अवधारणा हर्डर के नस्ल, धर्म एवं भाषा विशेष पर आधारित था किन्तु भारतीय राष्ट्रवाद इससे भिन्न धर्म, आध्यात्म एवं सांस्कृतिक मूल्यों से घनिष्ठ सम्बन्ध है।

स्वामी विवेकानंद का राष्ट्रवादी चिंतन, राष्ट्रभक्ति व भारतीय ज्ञान परंपरा से जुड़ा है। वह चरित्र में स्वाभिमान, आत्म विश्लेषण व आत्म निर्देश इत्यादि तत्त्वों को राष्ट्रवाद से जोड़कर देखते हैं। उनकी राष्ट्रीयता धर्म, कर्म एवं अभय होकर सहभागिता पर टिकी है। वह कहते थे – "जो धर्म मनुष्य के हृदय में शक्ति का संचार न करे वह धर्म नहीं है चाहे वह गीता, उपनिषद या वर्ष भागवत का धर्म हो। शक्ति धर्म से महान है तथा शक्ति से महान कोई नहीं।"

(The Life of Swami Vivekananda, अद्वैत आश्रम कोलकाता, पृष्ठ- 699)

उन्होनें भारतीय समाज, धर्म और संस्कृति की स्वर्णिम विशिष्टताओं को उजागर किया। भारतीय धर्म में सार्वभौमिकता, मानवतावाद, निःस्वार्थ सेवा सहिष्णुता का सहज गुण हैं। "वसुधैव कुटुम्बकम्" और "सर्वे भवन्तु सुखिनः" का दर्शन भारतीयों के चिंतन की गहराई को स्पष्ट करते हैं। एक 'राष्ट्र के रूप में राष्ट्रवाद का सुस्थापित विचार करने का श्रेय लेने का दंभ भले ही पश्चिमी चिंतक भरते हों किन्तु मातृभूमि को 'देवतुल्य' मानना हमारी गौरवशाली संस्कृति का अंग रही है। "जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी"

विवेकानन्द का सांस्कृतिक राष्ट्रवाद भारतीयों में सांस्कृतिक गौरव के माध्यम से आत्मविश्वास बढ़ाकर स्वतंत्रता का मजबूत आधार तैयार करती है, वहीं दूसरी ओर वह पश्चिमी दर्शन के खोखलेपन को उजागर कर उनके श्रेष्ठता के दंभ को तोड़ते है। वह कहते हैं- "इसाई लोग मूर्ति पूजको की आत्मा का उद्धार करने के निमित्त अपने धर्म प्रचारकों को भेजने के लिए अत्यधिक उत्सुक रहते है किन्तु जब भारत वर्ष में भयंकर अकाल पड़ता है तो पीड़ितो को भूख से बचाने क्यों नहीं आते ?"

(विवेकानन्द साहित्य खण्ड-1, पृष्ठ-22)

राष्ट्रवाद का वास्तविक अर्थ तभी है जब विकास की अंतिम पंक्ति के अंतिम स्थान पर खड़े व्यक्ति के हितों की चिंता की जाए। दयाभाव, त्याग एवं परोपकार इत्यादि का गुण भारतीयों में सहज ही मिल जाता है। यह धरा राजा शिवि, ऋषि दधीचि और कर्ण जैसे दानियों की है, जिन्होनें मानवता की भलाई में अपने जीवन को कुर्बान कर दिया। इसी परंपरा को आगे बढ़ाते हुए स्वामी विवेकानन्द राष्ट्र को संगठित करने के लिए "दरिद्र नारायण" की सेवा को ईश्वर सेवा मानते है। वे सच्चा राष्ट्र निर्माण तब मानते हैं जब देश में मानव सेवा और बंधुत्व का गुण विकसित होकर उत्थान का सामूहिक प्रयास किया जायेगा।

संदर्भ सूचीः-

1. The Life of Swami Vivekananda (अद्वैत आश्रम कोलकाता, पृष्ठ-699)
2. विवेकानन्द साहित्य खण्ड-1, पृष्ठ-22)
3. रहबर हंसराज; योद्धा संन्यासी विवेकानन्द; राजपाल प्रकाशन।
4. राजयोग; स्वामी विवेकानन्द।
5. ज्ञानयोग, स्वामी विवेकानन्द।
6. शंकर; विवेकानंद की आत्मकथा; प्रभात प्रकाशन।